eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

भारत की सामाजिक संस्कृति और साहित्य

डॉ0 बेबी गोल्डी कक्कड[1]
[1]प्रवक्ता हिन्दी, राज स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज वाराणसी, उत्तर प्रदेश

Received: 26 Dec 2025 Accepted & Reviewed: 28 Dec 2025, Published: 31 December 2025

Abstract

भारत की सामाजिक संस्कृति और साहित्य के मध्य गहरा, बहुआयामी तथा ऐतिहासिक संबंध रहा है। भारतीय समाज की विविधता जाति, वर्ग, धर्म, भाषा, परंपरा और लोकाचार का प्रतिबिंब साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक काल तक, साहित्य ने न केवल समाज की संरचना, मूल्यों और संघर्षों को अभिव्यक्त किया है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बना है। भक्ति आंदोलन, रीतिकाल, नवजागरण और आधुनिक साहित्य ने सामाजिक कुरीतियों, असमानताओं और मानवीय संवेदनाओं को स्वर प्रदान किया। इस अध्ययन में भारतीय सामाजिक संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं तथा उनके साहित्यिक रूपांतरण का विश्लेषण किया गया है, साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि साहित्य किस प्रकार सामाजिक चेतना के निर्माण और संरक्षण में सहायक रहा है।

मुख्य शब्द– भारतीय संस्कृति, सामाजिक संरचना, साहित्य, परंपरा, आधुनिकता, सामाजिक परिवर्तन, लोकजीवन

Introduction

भारत की सामाजिक संस्कृति और साहित्य का संबंध अत्यंत प्राचीन, गहन और पारस्परिक रहा है। भारतीय समाज की बहुरंगी संरचना जिसमें विविध जातियाँ, वर्ग, धर्म, भाषाएँ, रीति–रिवाज और जीवन–मूल्य समाहित हैं साहित्य में सजीव रूप में अभिव्यक्त होती रही है। साहित्य न केवल समाज का दर्पण है, बल्कि वह सामाजिक चेतना को जाग्रत करने वाला सशक्त माध्यम भी रहा है। भारतीय संस्कृति की मूल भावना 'वसुधैव कुटुम्बकम' से लेकर लोकजीवन की सहज संवेदनाओं तक, साहित्य ने मानवीय अनुभवों को शब्दबद्ध कर समाज के अंतर्मन को स्वर प्रदान किया है। वैदिक, उपनिषदिक, महाकाव्यात्मक तथा पुराण साहित्य से लेकर भक्ति, रीतिकाल और आधुनिक युग तक, प्रत्येक कालखंड का साहित्य अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों, मूल्यों और संघर्षों को प्रतिबिंबित करता है।

भक्ति आंदोलन ने सामाजिक समता और मानवीय करुणा का संदेश दिया, वहीं आधुनिक साहित्य ने शोषण, असमानता, नारी विमर्श और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों को केंद्र में रखा। इस प्रकार साहित्य सामाजिक परिवर्तन का वाहक बनकर उभरा है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय सामाजिक संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं तथा उनके साहित्यिक अभिव्यक्तियों का विश्लेषण करना है। साथ ही यह भी स्पष्ट करना है कि किस प्रकार साहित्य ने सामाजिक मूल्यों के संरक्षण, पुनर्संरचना और नवचेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह भूमिका भारतीय समाज और साहित्य के अंतर्संबंध को समझने की आधारभूमि प्रदान करती है, जो आगे के अध्ययन के लिए एक सुदृढ़ संदर्भ निर्मित करती है।

भारत की सामाजिक संस्कृति को जानने के पहले संस्कृति शब्द को जानना अति आवश्यक है कि संस्कृति है क्या इसकी उत्पत्ति कहां से हुई ? सम + कृति, अर्थात सुन्दर है जो कृति वह है संस्कृति।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

संस्कृति का मानव जीवन में विशेष महत्व है, इसका सम्बन्ध मानव जाति के आदर्श परंपरा रीति रिवाज, विचार मान्यताओं से है। संक्षेप में मानव ने जिन क्रियाकलापों, मान्यताओं को पीढ़ी दर पीढ़ी ग्रहण और प्रशस्त किया, उन्हें समान्य से विशिष्ट बनाया उसे ही शुद्ध रूप मे संस्कृति कह सकते हैं। वैदिक काल की अपनी अलग पहचान व मान्यता थी। यज्ञ, हवन, पूजा ध्यान वर्णाश्रम की सुदृढ़ व्यवस्था थी! इसी प्रकार सांस्कृतिक अभ्युदय के इतिहास में वेद तथा पुराणों का विशिष्ट स्थान था मानव मर्यादा की सुदृढ़ व्यवस्था थी। आगे चल कर महाभारत और रामायण काल मे साँस्कृतिक विरासत को नवीन रूप मिला, रामायण काल, त्याग बलिदान, रिश्तों की मर्यादा का युग था एक ऐसा समय जब सन्तान अपने माता पिता, अन्य किसी भी रिश्ते के लिए स्वयं को बलिदान कर देती थी वही महाभारतकाल मे रिश्तों की मर्यादा टूटने लगी आपसी स्वार्थ ईष्या के कारण मानवता तुच्छ होने लगी।

हमारी सांस्कृतिक विरासत विनष्ट होती चली गयी। नारी देह अब सम्मान की नहीं उपभोग की वस्तु मात्र बन कर रह गयी थी, मानवता शर्मसार होने लगी इस समय आवश्यकता थी एक सुदृढ़ समाज व्यवस्था की, भारतीय संस्कृति की लाज रख सके ऐसे अवतार की तब महात्मा बुद्ध जैसे धर्मनेताओ का आगमन भारत के लिए वरदान साबित हुआ, सत्य अहिंसा, मानव, जीव दया करुणा का भाव पुनः जागृत होने लगा सामान्य सद्भाव मैत्री की त्रिवेणी ने भारतीय संस्कृति और कला को सार्वभौमिक विश्व स्तर पर पहुंचाया आज भी उनके अनुयायियों की संख्या बहुतायत है। इनके बाद मौर्य वंश का पताका लहरा रहा था इस समय की कोई विशेष संस्कृति, उपलब्धि नहीं है, इस समय की सबसे बड़ी उपलब्धि संगीत का समायोजन था, कौटिल्य का अर्थशास्त्र मौर्य साम्राज्य की सर्वांगीण प्रगति का विश्व कोष है।

अशोक की धर्म लिपियां भारत के चतुर्दिक अभिलेखों के रूप में पाई जाती है सातवाहन युग में संस्कृति को नवीन दशा – दिशा मिली मध्य युग में वास्तुचित्र, कला तक्षण जैसी त्रिवेणी ने भारत की चित्र भूमि को अभि– सिचित कर उर्वरक बनाया दूसरी ओर मुगल साम्राज्य में लूटपाट, मारना भारतीय जनता का शोषण कर संस्कृत प्रतिष्ठानों को बहुत तहस–नहस कर दिया आधुनिक भारत के इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक नवजागरण में राजनीतिज्ञों बुद्धिजीवियों साहित्यकारों संगीतकारों वैज्ञानिकों का महान योगदान रहा है और आगे चलकर भी रहेगा हमारे साहित्य जगत में साहित्यकारों ने भी अपनी रचना में इन सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने जैसा महत्वपूर्ण कार्य किया है।

हमारे भारतीय संस्कृति के साहित्यकारों की संख्या अनगिनत है जिसे समझने के लिए हमें आवश्यकता है उसे पढ़ने की यदि हम कबीर साहित्य की बात करें तो कबीर काव्य की प्रासंगिकता आज भी है स समाज मे जाति धर्म के नाम पर व्याप्त भेद भाव, ऊंच नीच, क्रोध, इच्छा, मोह लोभ अहिंसा जैसे तमाम गुण अवगुणों ने हमारी संस्कृति को तहस–नहस कर दिया था, जिसे कबीर ने दूर करने के लिए अपना उग्र रूप मुखरित किया, जायसी सांस्कृतिक चेतना संपन्न कवि थे जिस कवि की सांस्कृतिक चेतना जितनी अधिक संपन्न होगी इसका साहित्य उतना ही समृद्ध होता है।

जायसी की दृष्टि समन्वयवादी है जो प्रेम दर्शन धार्मिक चिंतन में दिखलाई देती है सूर का काव्य विविधताओं से भरा पड़ा है, तुलसी संस्कृति के प्रगतिवादी कवि हैं वह मानते थे कि समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है संबंधों की घनिष्ठता व उतार–चढ़ाव का जैसा रूप तुलसी काव्य में देखने को मिलता है वैसा अन्यतम नहीं है यह वह वक्त था जब लोग पेट के लिए क्या–क्या नहीं किया करते थे, तुलसी ने अपने काव्य के माध्यम से एक सुखी समाज की कल्पना की उन्होंने कहा –

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

दैहिक दैविक भौतिक तापा
रामराज नहीं काहुहि व्यापा

तुलसीदास जी के बाद रीतिकाल का आगमन हुआ अब पूरा का पूरा समाज भक्ति के नाम पर श्रृंगार में डूबा हुआ थास धर्म कर्म पूजा पाठ के स्थान पर सिर्फ वासना का बोलबाला था। एक ओर अकबर जहांगीर जैसे शासको की उदार नीति जो औरंगजेब के आगमन से ही विलुप्त हो चुकी थी चारों ओर अंधविश्वास का बोलबाला था नारी सिर्फ देह बनकर रह गई थी बलात्कार की घटना घटने लगी थी।

अब वह समाज था जब हमारी संस्कृति महज मजाक बनकर रह गई थी यहां तक कि हमारे साहित्यकारों की नजर, वाणी भी नारी सौंदर्य पर जाकर सिमट गई थी जो हमारे साहित्यकार संस्कृति को शर्मसार कर रही थी, ऐसे में भूषण जैसे कवि ने शिवाजी का प्रसंग उठाकर हमारी खोई संस्कृति, संपत्ति वापस दिलाई। रीतिकाल की समय सीमा काफी लंबी थी अतः हमने बहुत कुछ खोया रीतिकाल के बाद आधुनिक काल की समय सीमा आरंभ हुई जिनकी समय सीमा काफी लंबे समय से आज तक है।

एक ऐसा समय जब विभिन्न विधाओं को लिखना आरंभ किया गया जैसे कविता, कहानी उपन्यास नाटक कहानी एकांकी संस्मरण रेखाचित्र इस काल के साहित्यकारों की दृष्टि स्वार्थ अवसरवाद अनिश्चित शोषण पर केंद्रित हो गई थी जिसका चित्रण यथार्थ की भाव भूमि पर केंद्रित हो गया यदि हम रचनाकार, महान साहित्यकार नागार्जुन को देखे उनको आधुनिक युग के कबीर की संज्ञा से विभूषित किया गया है वह प्रगतिशील चेतना के वाहक, जन चेतना के पक्षधर मानवता के पोषक सृजनात्मक कवि, क्रांति के साथ संवाहक, मानवता के प्रतिष्ठापक कवि है उनकी कोई भी कृति पढ़ी जाए सब में माटी की सुगंध है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं साहित्य समाज का आईना है जिसमें हम तत्कालीन समय, देश की छवि देख सकते हैं क्योंकि रचनाकार उन्हीं बातों को अपनी रचना का विषय बनता है जो उस समय के समाज में घटित होता है चाहे वह बात अच्छी हो या बुरी हो और जब तक ऐसे महान साहित्यकार हमारे समाज में होते रहेंगे तब तक हमारा साहित्य, हमारी संस्कृति सदैव जीवित रहेगी

संदर्भ सूची–

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, ISBN: 978–8126002109
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी, भारतीय साहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, ISBN: 978–8126702276
3. रामविलास शर्मा, भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, ISBN: 978–8126711032
4. नगेन्द्र, भारतीय साहित्य का समाजशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, ISBN: 978–8171177351
5. नामवर सिंह, कहानी नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, ISBN: 978–8126712404
6. प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, सरस्वती प्रेस (संकलित निबंध)
7. A-L- Basham — The Wonder That Was India] Rupa Publications] ISBN: 978–8129114885
8. Radhakrishnan, S- — Indian Philosophy, Vol- I, Oxford University Press, ISBN: 978–0195638202